हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-2)

8 Test

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–HL3

Name: Alok Prasad **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** * 7100

Center & Date: MKN 30 July **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 590 7765

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) रोई गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।

तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।

सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सुनारी।।

साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कोनि सो घरी करैं पिउ फेरा?।।

दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।

रकत न रहा, विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।

पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु नाथा।।

बरस दिवस धनि रोइ कै, हारि परी चित झाँखि।

मानुष घर घर बूझि कै, बूझै निसरी पाँखि।।

'अवधी के अरघान' जायसी ठेठ अवधी की मिठास का प्रयोग करते हुए बारह मासा विरह की प्रस्तुति करते हैं। प्रस्तुत पंक्तियाँ जायसी कृत पद्मावत के 'नागमती वियोग खंड' से ली गई हैं।

प्रसंग: रत्नसेन के सिंहलद्वीप जाने के बाद नागमती का विरह

व्याख्या:

नागमती बारह महीने से विरह रूपी अग्नि में ग्रस्त है। उनका एक एक पल एक युग की भाँति बीता है। इसी विरह के कारण उनका सम्पूर्ण शरीर ज्वर कर कोयला हो गया है। उनकी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देह में तोला मॉस भी नहीं रहा है न तन में रक्त ही उनकी आँखों से बस आँसू ही बह रहे हैं

भाव सौंदर्य

1) विरह का बारह मासा वर्णन
2) ऊहात्मकता से युक्त विरह
3) प्रकृति विरह में संवेदन आरोप
4) इसी प्रकार की ऊहात्मकता युक्त विरह एक जगह बिहारी के यहाँ भी
"इत आवत चली जात उत चली छः सातक हाथ"

शिल्प सौंदर्य

1) भाषा - माधुर्य युक्त ठेठ अवधी
2) छंद - कडवकबद्ध शैली
3) अलंकार - उपमा रूपक
4) रस - विप्रलंभ श्रृंगार : शुक्ल जी कहते है कि
"यह हिंदू गृहिणी की पवित्र विरह वाणी है। आशिक माशूकों का निर्लज्ज प्रेम प्रलाप नहीं।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।

मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।

बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।

जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।

सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।

सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सूरदास का काव्य वात्सल्य, सख्य, शृंगार रस का प्रतिदर्शन है। प्रस्तुत काव्यांश जो कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा संकलित भ्रमरगीतसार से उद्धृत है; में भी विरह शृंगार की छाप दिखती है।

जब राधा अपने वियोग को कम करने हेतु वीणा वादन करती है तो उनके संगीत सुनने हेतु चंद्रमा पर मृग रथ रुक जाते हैं और रात्रि लंबी होने लगती है। तभी राधा वीणा दूर रखती है ताकि मृग भाग जाए और रात्रि बीत जाए। विरह वियोग में श्री कृष्ण का साथ छूटने से राधा को अब ठण्डा चंद्रमा भी अग्नि समान लगता है।

सूरदास के माध्यम से राधा कहती है। कि हे प्रभु अब दर्शन दोगे

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाव सौंदर्य

(क) प्रकृति पर विरह का संवेदन आरोप है। ऐसा अन्यत्र भी दिखता है।

" निसिदिन बरसत नैन हमारे
सदा रहति पावस ऋतु हमपें
जबते श्याम पधारे "

(ख) सूरदास की राधा की ही भांति पद्मावत में नागमती का विरह चित्रण हुआ है जहाँ प्रकृति विरह को तीव्र करती है।

" जैठ जरै जग बहे लुवारा
उठे बवंडर धिके पहारा "

काव्य सौंदर्य

* भाषा - ब्रजभाषा
* छंद - लीलाछंद
* रस - वियोग श्रृंगार रस
* अलंकार - उपमा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

यू तो बिहारी का काव्य देह मूलक श्रृंगार से भरा है किन्तु कहीं कहीं उनके यहाँ भक्ति ~~मूलक~~ के भी दर्शन होते है। प्रस्तुत पद्यांश जगन्नाथ दास रत्नाकर द्वारा संकलित बिहारी सतसई है से उद्धृत है, मे इसी भक्ति भाव का वर्णन है।

बिहारी कहते है कि प्रभु सबकी प्रार्थनाओं को सुनता है। किन्तु न जाने क्यों ~~उसका~~ उनकी गुहार प्रभु के समक्ष फीकी पड गयी है। प्रभु उनकी कृपा याचना स्वीकारने में आनाकानी कर रहे है।

भाव सौंदर्य

(1) बिहारी की भक्ति भावना की प्रस्तुति बेहद सुंदर है। ऐसा अन्यत्र भी बिहारी लिखते है

" मेरी भव बाधा हरौ
राधा नागरि सोय

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) बिहारी की भक्ति में कबीर की भाँति ~~बिरह~~ ईश्वर से मिलन की तड़प की अनुपस्थिति दिखती है।

काव्य सौंदर्य

1 भाषा - उत्कृष्ट ब्रज भाषा

2. छंद - दोहा छंद
उनके दोहे ~~सतसैया~~ के कहा जाता है
" सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर
देखन में छोटे लगे घाव करे गंभीर

3. बिम्बात्मक बिंब विधान से युक्त
अलंकार - उपमा
रस - भक्ति रस

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संश्लिष्ट अर्थबोधन व उत्कृष्ट प्रयोगों के कवि निराला किसी विचारधारा से बंधने के बजाय अपने प्रसंग का स्वयं चयन करते व निभाए भी। प्रस्तुत पंक्तियाँ ~~उनके संकलन~~ ~~[illegible]~~ उनकी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से उद्धृत है।

प्रसंग - राम और उनकी सेना ~~[illegible]~~ का युद्ध से लौटने का दृश्य

राम जब अपनी सेना के साथ लौटकर आते हैं। तब इस मनोदशा में ~~[illegible]~~ उन्हें एक तरफ हारने का डर सता रहा है। अर्थात् अमानिशा की रात के काले अंधकार में उन्हें कोई समाधान नजर नहीं आ रहा है। पवन शांत है, पीछे लगातार समुद्र गरज रहा है और श्री राम पर्वत की भांति ध्यान मग्न बैठे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाव सौंदर्य

(1) निराला ईश्वर का मानवीकरण करने में सफल हुए है। और राम के अंदर संशय, हारने का डर, इत्यादि स्पष्ट रेखांकित हुए है। अन्यत्र भी यही भाव स्पष्ट दिखता है।

- स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा
  फिर फिर संशय
  रह-रह उठता जगजीवन में
  रावण जय भय,

(2.) प्रकृति का सुंदर प्रयोग

काव्य सौंदर्य

(1) भाषा - तत्सम बहुला खड़ी बोली
(2) छंद अनुपस्थिति किन्तु लयात्मकता विद्यमान
(3) बिंबात्मक बिम्ब विधान
(4) महाकाव्यात्मक औदात्य की लंबी कविता
(5) भयानक रस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

नवजागरण चेतना के कवि मैथिलीशरण गुप्त के यहाँ आत्म आलोचना और आत्मगौरव दोनों भाव दिखते है। प्रस्तुत पंक्तियाँ उनकी कविता भारत-भारती से उद्धृत है; में आत्म आलोचना का यही स्वर उद्गीत होना है।

प्रसंग: गुप्त लोगों को जागृत करने हेतु 'आत्म आलोचना' का प्रयोग कर रहे हैं

गुप्त जी कवियों की आलोचना करते हुए कहते है कि जो कवि पहले आनन्ददायक शिक्षक की भूमिका निभाया करते थे। और वह भक्ति में श्रीराम का अनुगमन करते थे। अब कवि कर्म अपने मार्ग से इतर भटक कर रह गए हो। वे नारी के भोगमूलक शृंगार में ही व्यस्त हो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाव सौंदर्य

① नवजागरण का चेतना की स्वर प्रस्तुति।

② अन्यत्र भी वह कवियो को यह सीख देते है।
∵ केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए उसमें उचित उपदेश का मर्म होना चाहिए।

③ भारतेंदु के यहाँ भी कुछ कहीं आत्मआलोचना का इसी प्रकार का स्वर नजर आता है।

काव्य सौंदर्य

① भाषा - तत्समी खड़ी बोली किन्तु अभिधात्मक, गद्यात्मकता से युक्त

② छंद → हरीगीतिका, कुण्डली का अत्यधिक प्रयोग

③ रस - शांत

प्रासंगिकता

आज भी कवियो, फिल्म निर्माताओं हेतु गुप्त जी के यह विचार बेहद प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'सूरसागर में वर्णित गोपियों का विरह बैठे-ठाले का धंधा है।' इस अभिमत के पक्ष या विपक्ष में अपना तार्किक मत प्रस्तुत कीजिये। 20

सूरदास वात्सल्य, सख्य, श्रृंगार के कवि है। उनके श्रृंगार में विप्रलंभ श्रृंगार की प्रतिध्वनि ~~अखण्ड~~ ~~रूप~~ आद्यन्त दिखाई देती है।

इसी संदर्भ में आचार्य शुक्ल का मानना है कि गोपियों का विरह बैठे-ठाले का धंधा है। वस्तुत: वह ~~तर्क के~~ इसके पीछे के तर्क भी प्रस्तुत करते हुए कहते है कि श्री कृष्ण जब अपने दायित्व पूर्ति हेतु मथुरा गए हुए थे। वहीं उनकी गोपियाँ यमुना किनारे बरसाना गोकुल में विरह से ऐसी पीड़ित नजर आती है मानों कि उनका प्रिय सात समंदर दूर हो। अत: गोपियों के विरह में शुक्ल जी को वह अनुभूतिजन्य पीडा नजर नहीं आती है जोकि उन्हें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पद्मावत की नागमती में आती है।

हालाँकि कुछ आलोचक की राय आ० शुक्ल जी से भिन्न है। डा० मैनेजर पांडेय का यह मानना है कि प्रेम और विरह में भौतिक दूरी मायने नहीं रखती बल्कि मानसिक दूरी अधिक मायने रखती है यही कारण है कि सात - आठ कोस की भौतिक दूरी के बावजूद गोपियाँ कृष्ण के विरह में अत्यंत भावुक रहती है।

विरह की यही भावुकता सूरदास के काव्य में कई स्तरों पर नजर आती है। गोपियाँ श्रीकृष्ण के पत्र के पाकर भावुक होना इसी अनुभूति को दर्शाता है।

- निरखत अंक श्याम सुंदर के
  बार बार लगावति छाती
  लोचन जल कागद मिलि कै
  ह्वै गयी श्याम - श्याम की पाती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोपियाँ के विरह जन्य रहने के कारण भी है ~~[illegible]~~ वस्तुत: श्री कृष्ण गोपियों से वायदा करके मथुरा गये थे। किन्तु वह अपने वायदे को भूल मथुरा के ही निवासी हो गए ऊपर से उद्धव की नीरस शुष्क ज्ञान के माध्यम से उन्हें निर्गुण का पाठ पढ़ाने की कोशिश की जा रही थी। इस स्थिति में गोपियों के अपने भावात्मक प्रेम के प्रति तर्क बेहद सुंदर बन पड़े है

"उर में माखन चोर गड़े
अब कैसहू निकसति नाहीं
तिरछे जो अड़े है।"

चूँकि गोपियों और कृष्ण ने यमुना किनारे प्रकृति में संयोग शृंगार में जो समय व्यतीत किया था। श्री कृष्ण के मथुरा जाने के बाद अब वही प्रकृति उनकी विरह पीड़ा को और बढ़ा रही है।

"निसिदिन बरसत नैन हमारे
सदा रहति पावस रितु हमपै
जबते स्याम सिधारे।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रज के मधुबन बिना श्री कृष्ण के गोपियों को आग की भांति प्रतीत होते है।

" बिन गोपाल बैरिन भई कुंज
तब ये लता लगति अति शीतल
अब भई विषम ज्वाला की पुंजे।"

गोपियों के विरह दग्ध होने के कारण और भी है। वस्तुतः श्री कृष्ण के मथुरा जाने पर जैसे ही गोपियों को यह अहसास होता है कि वह किसी कुब्जा नामक स्त्री के प्रेम में पड गए है तो उनकी विरह पीडा और बढ जाती है।

" कुब्जा को पटरानी कीन्हीं
और हमहिं देत बैराग्य "

अतः स्पष्ट है कि गोपियों का विरह कोरे टाले का धंधा नही बल्कि उनके अनुभूतिमूलक प्रेम में उत्पन्न खालीपन की पीडा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) क्या कबीर की काव्य-भाषा काव्यात्मकता की कसौटी पर खरी उतरती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कबीर की काव्यभाषा वैविध्य से सम्पन्न है। यही कारण है कि आचार्य शुक्ल को कबीर की भाषा में यह कवित्व गुण नजर नहीं आता वहीं हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' घोषित करते हैं।

कबीर के काव्य के कई पक्ष रहे हैं। वस्तुतः कबीर ने नाथपंथ के हठयोग के प्रभाव से जो अन्तसाधनात्मक अनुभूति से युक्त संधा भाषा में जो उक्तियाँ कहीं हैं वहाँ उनकी काव्यभाषा में काव्यात्मकता नजर नहीं आती। उदाहरण हेतु

"नैया विच नदिया डूबती जाए"

इसके स्तर पर कबीर को काव्य समाज से जुड़ता है। जहाँ वह आडंबर, साम्प्रदायिकता, जातिवाद की आलोचना करते हैं। और उपदेश संबंधी बातें कहते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

यहा उनकी काव्यात्मकता का मध्यम स्तर नजर आता है। जैसे.

" काँकर पाथर जोरि के
मस्जिद लाई बनाय
ता चढि मुल्ला बांग दे
क्या बहरा हुआ खुदाय "

उनकी काव्यात्मक का उच्च स्तर वहाँ दिखता है जब वह ईश्वर मिलन की तड़प और ईश्वर मिलन संबंधी कविताएँ लिखते हैं जैसे।

" तलफै बिनु बालम मोर जिया
दिन नहिं चैन रात नहिं बतिया
तलफ - तलफ के भोर किया

पर तो स्वयं कबीर अपने आप को कवि नहीं मानते है वह कई बार इसकी घोषणा भी करते है कि -

" जिन तुम जानौ गीत है
वह निज ब्रह्म विचार "

किन्तु इसके बावजूद कबीर की के यहाँ काव्यात्मकता आद्यंत दिखाई देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यू तो वह सजग कवि नहीं फिर भी उनके यहाँ काव्य के शोभाकारक धर्म आद्यन्त दिखाई देते हैं। जैसे.

बिम्ब की उपस्थिति

"जल में कुंभ कुंभ में जल
बाहर भीतर पानी"

अलंकारों की उपस्थिति

"सात समंद की मसि करौं
हरिगुण लिखा न जाई"

प्रतीकों का प्रयोग

"लाली मेरे लाल की जित देखें तित लाल
लाली देखन मैं चली मैं भी हो गयी लाल"

अतः स्पष्ट है कि कबीर में काव्य का सीमित अंश ही काव्यात्मकता के गुण से हीन है। वाणी स्तरों पर विशेषकर भक्ति संबंधी रचनाओं में तो वह बिहारी को भी टक्कर देते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

आचार्य शुक्ल कबीर और जायसी के रहस्यवाद की तुलना करते हुए कहते हैं कि कबीर का रहस्यवाद जहाँ रूखा और शुष्क है वहीं जायसी का माधुर्य युक्त। वस्तुत: शुक्ल जी कहते हैं कि जायसी की भांति प्रकृति के कण-कण में ईश्वर का अनुभव करने वाली विशेषता जायसी में ना थी।

वस्तुत: जायसी मूलत: बहिर्मुखी रहस्यवाद के कवि है। तो वहीं कबीर अंतर्मुखी रहस्यवाद के।

जायसी - "जेहि दिन दसन जोति निरमई
बहुत जोति-जोति ओहि भई

कबीर के यहाँ भी कहीं कहीं बहिर्मुखी रहस्यवाद का अंश दिखता है।

जैसे - "मोको कहो ढूंढ रे बंदे
मैं तो तेरे पास
न मैं मस्जिद न मैं देवल
ना काबे कैलास"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार कबीर के ऊपर नाथपंथी संप्रदाय के कारण साधनात्मक रहस्यवाद की छाप दिखती है।

"जल में कुंभ कुंभ में जल है
बाहर भीतर पानी
फूटा कुंभ जल जलहि समाना
इहै तथ गए ग्यानी"

जायसी के यहाँ भी समन्वयात्मक भाव से साधनात्मक रहस्यवाद दिखता है।

"गढ तस बाँक जैसी तोरी काया
पुरुष देख आही कै छाया"

इसी प्रकार कबीर और जायसी के यहाँ भावनात्मक रहस्यवाद की भी उपस्थिति नजर आती है।
कबीर की ईश्वर मिलन संबंधी कविताओं में भावनात्मक रहस्यवा[द] इस प्रकार दिखता है

"जो बिछुडे है प्यारे से
भटकते दर बदर फिरते
हमारा यार है हमन में

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

हमन को इंतजारी क्या"

जायसी भी लिखते है।

"पिउ मन हृदय भेंट न भई"

अतः स्पष्ट है कि कबीर और जायसी का रहस्यवाद मूल दृष्टि में अलग होते हुए भी समन्वयात्मक रूप धारण किए हुए है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) पद्मावत अन्योक्तिपरक अर्थ धारण करने वाली रचना है या समासोक्तिपरक? विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अन्योक्ति और समासोक्ति दो अलंकार हैं। जिसमें अन्योक्ति से तात्पर्य अस भाव्य से है जिसमें अप्रस्तुत अर्थ ही कविता का मूल अर्थ होता है। वहीं समासोक्ति में अप्रस्तुत और प्रस्तुत दोनो अर्थ ही विद्यमान रहते है।

पद्मावत को लेकर इस संबंध में भारी विवाद है कि इसे अन्योक्ति माना जाए या समासोक्ति। जहाँ ग्रियर्सन पद्मावत को अन्योक्ति बताते हैं। तो वहीं आचार्य शुक्ल पद्मावत को समासोक्ति बताते है। वहीं विजयदेव नारायण शाही इस विवाद को ही निरर्थक बताते हैं।

वस्तुतः इस विवाद का कारण रचना के अंत में लिखी चार पंक्तियाँ हैं जिनमें चित्तौड

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को तन, पद्मावती को बुद्धि, नागमती को दुनिया धंधा, अलाउद्दीन खिलजी को माया कहा गया है।

वस्तुत: इन्हीं चार पंक्तियों के आधार पर कुछ आलोचकों ने पद्मावत को अन्योक्ति रचना बताने का प्रयास किया। वहीं शाही जैसे आलोचक इसे अंश का प्रक्षिप्त मानकर इस विवाद को निरर्थक सिद्ध करते हैं।

वस्तुत: अगर पद्मावत के संदर्भ में इसका निर्धारण किया जाए तो स्पष्ट होता है कि रचना के उत्तरार्द्ध का अप्रस्तुत अर्थ बिल्कुल वहीं निकलता। ~~वहीं रचना को पूर्वार्द्ध~~ जिसमें रत्नसेन के चित्तौड़ लौटने की कथा का वर्णन है।

किन्तु इसके पूर्वार्द्ध में कुछ कुछ अंश ऐसे हैं जहाँ पद्मावती को खुदा रूप में प्रस्तुत किया गया है। यही कारण है कि कहीं कहीं पद्मावत में रहस्यवाद की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छाप छिपती हो किन्तु यह रहस्यात्मकता कुछ कुछ दर्शन देने के बाद लुप्त होती दिखती है।

आचार्य शुक्ल भी तो पद्मावत के प्रस्तुत अर्थ को ही प्रमुख मानते है किन्तु इसके अप्रस्तुत अर्थ को भी कुछ महत्व देते हुए इसे समासोक्ति का दर्जा देते है। पद्मावत के कुछ उदाहरण जहाँ पद्मावती को खुदा रूप में दर्शित किया है

"जेहि दिन दसन जोति निरमई
बहुत जोति जौति ओहि भई
रवि ससि नखत दीपहिं
ओहि ज्योति रतन पदारथ मानक मोती"

किन्तु इसके बावजूद शाही इस विवाद को निरर्थक बताते है फिर भी इसको ~~प्रस्तुत~~ ~~कल्पि~~

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कुछ आलोचकों ने प्रकृति माध्यम माना है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) ''ब्रह्मराक्षस' कविता बिंब-निर्माण में नवीनता का परिचय देती है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

बिंब पश्चिमी समीक्षा का एक अंग है। बिंबात्मकता से तात्पर्य रचना के पाठक की ऐन्द्रिक अनुभूति जन्य होने की विशेषता से है। मुक्तिबोध की कविताएँ बिम्ब योजना का सफल प्रस्तुति करती है। यही कारण है कि उनकी कविताओं को 'बिंबों को नगर' कहा गया है।

ब्रह्मराक्षस कविता में बिंब निर्माण की नवीनता इसके रहस्यात्मक और भयानकता में दिखती है।

" शहर के इस ओर
खण्डहर की तरफ
परित्यक्त सूनी बावड़ी "

ब्रह्मराक्षस कविता में ब्रह्मराक्षस के विभाजित व्यक्तित्व दर्शित होता है। जहाँ ब्रह्मराक्षस के आत्मचेतस एवं विश्वचेतस मन के बीच संघर्ष दिखता है। इसका सम्पूर्ण

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

चित्रण बिंब योजना की दृष्टि से बेहद सजीव हो उठा है।

" खुदा ऊँचा एक जीना साँवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ
वे एक अभ्यंतर निराले लोक की
एक चढ़ना औ उतरना
पुनः चढ़ना औ लुढ़कना
मोच पैरों मे "

मुक्ति बोध की कविताओं में एकल बिंब, संश्लिष्ट बिंब के साथ साथ श्रव्य एवं दृश्य बिंब की भी छाप नजर आती है। जब ब्रह्मराक्षस पाप मुक्ति हेतु स्नान करता है तब बिंब वर्णन बेहद सजीव हो उठता है।

" तन की मलिनता
दूर करने को प्रतिपल
ब्रह्म राक्षस
घिस रहा देह
हाथ के पंजे बराबर
बाँह छाती मुँह छपाछप "

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'ब्रह्मराक्षस' में ब्रह्मराक्षस का कोठरी में मर जाने का दृश्य भी संजीव चित्रात्मक दृश्य प्रस्तुत करता है।

"वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
और मर गया
मरे पक्षी सा
विदा हो गया"

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मुक्तिबोध बिंब क्षमता के धनी कवि है। बिंब क्षमता के मामले में उनकी तुलना निराला, सूर जैसे कवियों से ही की जा सकती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूर के काव्य में निहित वक्रता और वाग्विदग्धता पर प्रकाश डालिये। 15

सूरदास का भ्रमरगीत सार एक प्रकार से वक्रता और वाग्विदग्धता का ही काव्य है। वस्तुत: गोपियों और उद्धव के बीच का वाक्युद्ध के कारण ही गोपियाँ के कथनों में वक्रता और वाग्विदग्धता के दर्शन होते है।

जब उद्धव गोपियों को निर्गुण ब्रह्म की रुखी सूखी बाते करते है तो गोपियाँ अपने भावनात्मक प्रेम का अपमान होते देखे उद्धव से वक्रता मूलक अंदाज में पूछती है कि

"निर्गुण कौन देस को बासी
को है जनक जननि को कहियत
कौन नारी को दासी"

इसी प्रकार जब गोपियाँ अपने भावनात्मक प्रेम के पक्ष में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तर्क प्रस्तुत करती है। तो उनकी वक्ता मूलकता अनायास ही पाठक का ध्यान तीव्रता से आकर्षित करती है।

" उधौ मन न भए दस बीस
एक हुतौ सो गए श्याम संग
को अवराधे ईस "

जब गोपियाँ अपने प्रेम के अपमान से आहत होती है तब वह अपने सामने वाले का अपमान करने से भी नहीं चूकती। उद्धव से वह वक्रता मूलक शैली में कहते हैं कि

" आयो घोष बड़ो व्यापारी
लादि खेप गुन ज्ञान जोग की
ब्रज में आन उतारी "

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अतः स्पष्ट है कि सूर का काव्य वक्रता और वाग्विदग्धता से परिपूर्ण है। आचार्य शुक्ल तो इस संदर्भ में कहते भी है कि

"सूर को एक ही बात को घुमा फिराकर कहने के ना जाने कितने अंदाज मालूम थे"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'कामायनी' के आधार पर जयशंकर प्रसाद के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नैनाँ अंतरि आवरूँ, निस दिन निरषौं तोहि।

कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोंहि।।

कबीर का काव्य ईश्वर मिलन की तड़प, सद्गुरु की महिमा और विरह की तड़प से युक्त है। प्रस्तुत दोहा जो कि डा० श्याम सुंदर दास द्वारा संकलित कबीर ग्रंथावली के 'विरह के अंग' से उद्धृत है है; मे इसी विरह की तड़प दिखती है।

कबीर कहते हैं कि वह प्रभु के दर्शन के इंतजार में है और उनकी आखें थक चुकी है वह दिन-रात आँखे खोलकर प्रभु दर्शन की उम्मीड मे है कि कब ईश्वर उन्हे दर्शन देगा। वह दिन कब आयेगा।

विशेष

1. ईश्वर मिलन की तड़प पर भावात्मक रहस्यवाद की छाप दिखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) अन्यत्र भी कबीर ईश्वर मिलन की तड़प में रहते हैं।

"वह कै बिनु बालम मोर जिया
दिन नहिं चैन रात नहीं निदियां।
तलफ - तलफ के भोर किया।"

काव्य सौंदर्य

1. भाषा - सधुक्कड़ी / पंच मेल खिचड़ी
छंद - दोहा
रस - भक्ति रस
अलंकार - उपमा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी के अरधान जायसी ने ठेठ अवधी की मिठास का प्रयोग करते हुए बारहमासा विरह का वर्णन कर विरह शृंगार की प्रस्तुति की है। प्रस्तुत पंक्तियाँ जायसी कृत पद्मावत के नागमती वियोग खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : रत्नसेन के सिंहलद्वीप जाने के पश्चात नागमती की दशा

व्याख्या
पूरा भादौं का महीना बहुत मुश्किल से बिता है। ~~दुख~~ नागमती कहती है कि विरह रूपी सर्प उन्हें इस गर्मी में डँस रहा है। वह अपने प्रिय का इंतजार करते करते आँखे खोले बैठी है। जिस प्रकार आकाश में बिजली चमकती है उसी प्रकार विरह ~~पीड़ा~~ पीड़ा से वह ग्रस्त है —

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बादल बरस रहे हैं उनकी ओरी से जल टपक रहा है। पूरी पृथ्वी भर चुकी है

भाव सौंदर्य

1) नागमती के बारहमासा विरह का वर्णन बेहद सूक्ष्मता से। शुक्ल जी कहते हैं
"यह हिंदू गृहिणी की पवित्र विरह वाणी है आशिक माशूकों का निर्लज्ज प्रेम प्रलाप नहीं"

2) विरह में प्रकृति का संवेदन आरोप। यही भाव अन्यत्र भी
" जेठ जरैं जग बहे लुवारा

3) सूरदास के यहाँ भी गोपियों के विरह में यही पीड़ा आयेल मिलती है।
" निसिदिन बरसत नैन हमारे

शिल्प सौंदर्य

① भाषा - ठेठ अवधी
② छंद - कड़वक बद्ध शैली
③ रस - वियोग श्रृंगार
④ अलंकार - उपमा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

हिंदी के प्रयोगशील कवि निराला ~~जहाँ~~ में परिस्थितियों के समक्ष हार न मानने और आत्म संघर्ष को जोड़ छाप दिखती है वहीं उनकी कविता राम की शक्तिपूजा के राम में दिखती है।

प्रसंग: युद्ध से लौटने का दृश्य

व्याख्या: राम आगे आगे चल रहे है और पीछे उनकी सेना है उनके मक्खन जैसे पैर धरती पर है और धनुष कंधे पर ढीला ~~है~~ कर लिया है। उनकी जटाएँ छाती तक फैली हुई है। सम्पूर्ण अंधकारमय वातावरण में बैठे श्री राम की दो चमकती आँखे दूर स्थिति तारों की भांति चमक रही है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष
1. निराला आत्म संघर्ष के कवि है और निराशा को भेदकर जीतने का भाव के दर्शन राम की शक्ति पूजा में होते है।
2. इसी प्रकार के संघर्षमय जीवन से त्रस्त निराला भी चीत्कार करते हुए कहते है
" दुखी ही जीवन की कथा रही क्या कहूँ आज जो नहीं कही "

काव्य सौंदर्य
1. भाषा – तत्सम बहुला खड़ी बोली का श्रेष्ठतम स्तर
2. अलंकार - उपमा
3. रस - शांत
4. छंद अनुपस्थित किन्तु लयात्मकता विद्यमान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

नवजागरण चेतना के कवि मैथिलीशरण गुप्त में आत्मआलोचना का जो भाव दिखता है वही इन पंक्तियों में दिखित होता है जोकि उनकी कविता भारत भारती के 'वर्तमान खण्ड' से अवतरित है।

गुप्त जी कहते है कि जिन श्रेष्ठ सुंदर महलों में कभी देवता वास किया करते थे आज उन्हीं में उल्लुओं का वास है। वह हिंदुओं को चेतावनी देते हुए कहते है कि "अगर तुम इसी प्रकार मौज करते रहे तो तुम्हारा सम्पूर्ण विनाश निश्चित है"

भाव सौंदर्य

नवजागरण चेतना की स्पष्ट प्रस्तुति
"हम कौन थे क्या हो गए क्या होंगे अभी
आओ मिलकर विचार, ये समस्याएँ सभी"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसमें 'हम कौन थे' से 'क्या हो गए' का भाव दिखता है।

2.) भारतेंदु के यहाँ भी आत्म आलोचना का इसी प्रकार का स्वर दिखता है।

.. सर्वस लिए जात अंग्रेस
हम सिर्फ लेक्चर के वेन

काव्य सौंदर्य

1) भाषा - अभिधात्मक तत्सम खड़ी बोली
2) छंद - हरिगीतिका किन्तु तुक के प्रति अत्यधिक आग्रह
3) अलंकार - उपमा
4) बिंबात्मक विधान उपस्थित है।

प्रासंगिकता

↳ कर्मविहीनता हमेशा नाश का कारण बनी है। आज भी अगर हमें तरक्की करनी है तो मौज के बजाय कर्म करने होंगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,

सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,

कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।

अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।

पर मेरा अब भी है विश्वास

कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।

वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।

इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

निरीश्वरवाद से ईश्वरवाद की यात्रा करने वाले तथा सृजन शक्ति का आह्वान करनेवाले अज्ञेय प्रस्तुत पंक्तियाँ में सृजन शक्ति की अर्हता का वर्णन करते हैं प्रस्तुत पंक्तियाँ उनके संकलन 'आंगन के पार द्वार' की कविता ~~असा~~ 'असाध्य वीणा' से उद्धृत है।

प्रसंग → राजा प्रियवंद के समक्ष वीणा न बजने की वेदना प्रस्तुत करता है।

व्याख्या – हे प्रियवंद मेरे सारे जाने-माने कलावंत ~~इस~~ वीणा को साधने में असफल रहे हैं उनकी विद्या वीणा साधने में असमर्थ है। यही कारण है कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अब यह वीणा असाध्य वीणा नाम से विख्यात हो गयी है। किन्तु प्रियंवद मुझे अब यह विश्वास है कि व्रजकीर्ति का श्रम व्यर्थ न होगा यह वीणा तभी बजेगी जब कोई सच्चा साधक बजाएगा। |

विशेष

(1) सृजन शक्ति की अर्हता हेतु यह जरूरी है कि सृजन शक्ति के समक्ष अंहकार मुक्त होकर और लघुता का भाव हो

(2) सृजनात्मक रहस्यवाद की उपस्थिति

शिल्प सौंदर्य

(1) भाषा - तद्भव खड़ी बोली
छंद - अनुपस्थित किन्तु लयात्मकता विद्यमान
काव्यरूप - लंबी कविता

प्रासंगिकता

आज भी यह विचार प्रासंगिक है कि हम तभी सफल हो सकते है जब हम अहंकार मुक्त हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'असाध्य वीणा' कविता का संदर्भ लेते हुए 'व्यक्ति और समाज' के अंतर्संबंध के संबंध में अज्ञेय के विचारों का अन्वेषण कीजिये। 20

अज्ञेय ने जिस दौर में अपना स्वतंत्र कर रहे थे वह दौर एक तरफ मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित था जिसमें व्यक्ति और समाज में से समाज को अत्यधिक महत्व दिया जाता था वही दूसरी ओर अस्तित्वाद प्रभावित - भूखी पीढ़ी (Hungry generation) थी। जिसमें व्यक्ति को समाज के उपर महत्व दिया जाता था।

किन्तु अज्ञेय के विचार व्यक्ति और समाज के संबंध में एकदम स्पष्ट है। वह समाज में व्यक्ति को भी पर्याप्त महत्व देते है तो दूसरी ओर समाज को भी। 'नदी के द्वीप' कविता में इसकी स्पष्ट छाप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नजर आती है। जहाँ अज्ञेय कहते हैं।

"वह नदी का द्वीप है
जो हमें आकार देती है"

इसी प्रकार वह समाज में व्यक्ति के महत्व को भी प्रतिपादित करते हैं।

जैसे ... "बहना रेत होना है
अगर हम बहेंगे
तो रहेंगे ही नहीं"

अज्ञेय की असाध्य वीणा में व्यक्ति और समाज के संबंध में यही विचार प्रतिध्वनित होते हैं।

वीणा से उत्पन्न संगीत सृजन में स्पष्टत! जब वह परंपरा का अत्यधिक महत्व स्वीकार करते हैं तो मानो लगता है कि वह समाज के महत्व को प्रतिपादित कर रहे हो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

" श्रेय नहीं कुछ मेरा
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में
वीणा के माध्यम से अपने को
सब कुछ को सौंप दिया था। "

वहीं जब वीणा से संगीत सृजन होता है तो मानो प्रत्येक व्यक्ति पर उसका ~~प्रभाव~~ अलग-अलग पड़ता है।

" डूब गए सब एक साथ
सब अलग अलग एकाकी पार तिरे
x x x
उठ गयी सभा ~~कुछ~~
सब अपने अपने काम लगे
युग पलट गया "

अतः स्पष्ट है कि अज्ञेय प्रत्येक ~~व्यक्ति~~ व्यक्ति के व्यक्तित्व को महत्व देते हैं। वह न तो समाज को व्यक्ति पर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हावी होने देते हैं और न ही व्यक्ति को समाज पर।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागमती के विरह वर्णन को लेकर भिन्न, भिन्न आलोचकों की भिन्न भिन्न प्रतिक्रिया है। जहाँ एक ओर नारी वादी और प्रगतिवादी आलोचक नागमती के विरह वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहते है। तो वह शुकल जी इसे हिंदू गृहिणी की विरह वाणी बताते है।

वस्तुत: नागमती का विरह वर्णन बेहद विशिष्ट है। नागमती एक रानी होकर अपने पति द्वारा वंचित है। यह वंचना तब और अहम हो जाती है जब उसका पति दूसरी पत्नी की खोज में गया हो। अत: स्पष्ट है कि एक रानी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होने के बावजूद पति की वंचना झेलने को नागमती विवश है। यह विवशता मध्यकालीन नारी का ही चित्रण है। जहाँ पुरुष के पास शादी करने के अनेक अवसर थे। किन्तु नारी के पास नहीं।

वहीं इसी तरह नागमती का अपने पति हेतु सम्पूर्ण त्याग का चित्रण, खुद को जलाकर राख को पति हेतु बिछा देने का चित्रण उसी मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण है।

"यह तन जारौं छार के
कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परै
कंत धरै जहाँ पाँव"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अतः स्पष्ट है कि नागमती का विरह वर्णन मध्यकालीन नारी की दासता का ही चित्रण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'असाध्य वीणा' कविता में अज्ञेय मार्क्सवादी विचारधारा का खंडन और 'आधुनिकतावाद' का मंडन करते हैं। विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

~~असाध्य वीणा कविता में अज्ञेय~~ निरिश्वरवाद से ईश्वरवाद की यात्रा करने वाले अज्ञेय, सृजन शक्ति का आह्वान अपनी कविता असाध्य वीणा में करते है।

~~ब~~ मार्क्सवाद में पारलौकिकता का स्पष्ट खण्डन और लौकिकता का आग्रह रखता है। ~~क~~ मार्क्सवाद ~~इसके~~ में धर्म, ईश्वर आदि मान्यताएँ निरर्थक होने लगती है। वहीं अज्ञेय की रचना असाध्यवीणा ईश्वरीकरण की ओर यात्रा को प्रदर्शित करती है। अज्ञेय सृजन शक्ति को परमतत्व की अभिव्यक्ति कहते है। ~~उनकी रचना में अभिव्यक्त~~

"अवतरित हुआ संगीत
ब्रह्म का मौन
अशेष प्रभामय"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार मार्क्सवाद में समाज और व्यक्ति में ~~व्यक्ति~~ समाज को प्राथमिकता देते है वही अज्ञेय व्यक्ति को प्राथमिकता देते हुए आधुनिकतावाद का मंडन करते है। सृजन शक्ति से उत्पन्न प्रभाव मानो प्रत्येक व्यक्ति पर अलग अलग पड़ता है।

"डूब गए सब एक साथ
सब अलग अलग एकाकी पार तिरे
..।
उठ गयी सभा
युग पलट गया।
सब अपने अपने काम लगे"

इसी प्रकार अज्ञेय ने मार्क्सवादी अनास्था को भारतीय चिंतन की आस्था से तोड़ा है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"श्रेय नहीं कुछ मेरा
मैं तो डूब गया स्वयं शून्य
वीणा के माध्यम से सौंप दिया था
सबकुछ को मैंने"

स्पष्ट है कि असाध्य वीणा कविता में अज्ञेय मार्क्सवादी विचारों का खण्डन करते हैं और आधुनिकतावादी का मंडन करते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी की काव्य-वस्तु का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation